CC-I

M.A
1st year
1st Paper

भाषा की परिवर्तनशीलता के कारणों को स्पष्ट करें।

Ans— परिवर्तन इस सृष्टि का नियम है। संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तित होती रहती है, और भाषा भी उसका अपवाद नहीं है भाषा की प्रयोक्ता मनुष्य और उसका समाज परिवर्तित होता रहता है और उसके साथ-साथ उसके द्वारा प्रयुक्त भाषा भी परिवर्तित होती रहती है आज कोई भाषा उसी रूप में नहीं बोली जाती जिस रूप में आज से एक हजार वर्ष पहले बोली जाती थी। भाषा में परिवर्तन होता है, यह किसी भी भाषा के प्राचीन इतिहास को देखने से स्पष्ट हो जाता है भारत में ही वैदिक युग से लेकर आजतक भाषा कई रूप में बदल चुकी है एक ही मूल भाषा से स्थान, काल और परिस्थिति के भेद से हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगला, उड़िया आदि अनेक भाषाएँ हो गई जो आज परस्पर बहुत कुछ अबोध्य बन गयी है, किन्तु किसी दिन इन भाषाओं के बोलने वालों के पूर्वज एक या एक-जैसी ही भाषा का प्रयोग करते थे।

जिस प्रकार भाषा कहने पर ध्वनि, शब्द, वाक्य और अर्थ का बोध होता है उसी प्रकार भाषा के परिवर्तन से भी इन चारों का परिवर्तन अभिप्रेत है अर्थात भाषा के परिवर्तन के क्रम में ध्वनि, शब्द, वाक्य और अर्थ के परिवर्तन पर विचार करना पड़ता है। भाषा परिवर्तन के निम्नलिखित कारण है—

बाह्य कारण— (1) भौगोलिक प्रभाव— भाषा के परिवर्तन में भौगोलिक प्रभाव को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि जलवायु का प्रभाव, पहाड़ी भागों, मरुभूमियों तथा समतल मैदान में रहने वाले मनुष्यों के शारीरिक गठन, उनके चरित्र और ध्वनि-पद्धति पर भी प्रभाव पड़ता है। पहाड़ी भागों में रहने वाले मनुष्य जीविका के उपार्जन के लिए कठिन मेहनत करते हैं स्वभावतः उसका प्रभाव उनके भाषा में मार्दव के बदले पौरुष दिखायी देता है जब कि समतल भागों में रहनेवाले मनुष्यों की भाषा कोमल होती है जो भाषा परिवर्तन के कारण है।

(2) ऐतिहासिक प्रभाव— भाषा परिवर्तन में ऐतिहासिक प्रभाव स्पष्ट रूप से होता है जैसे विदेशी आक्रमण, राजनीतिक विप्लव, व्यापारिक संबंध आदि। हिन्दी में हजारों शब्द अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि आ गये ये सभी ऐतिहासिक प्रभाव के कारण ही हुआ है जिसके कारण भाषा में परिवर्तन हो जाता है।

(3) सांस्कृतिक प्रभाव— भाषा परिवर्तन में सांस्कृतिक प्रभाव भी मुख्य कारण है भारत में ही नहीं दूसरे देशों में भी अनेक बार सांस्कृतिक जागरण हुए, जब रूढ़ि और पुरातनता को भागकर जनता ने नवीनता को अपनाया है। भारत में स्वदेशी भाषा का आग्रह, स्वाधीनता [illegible]

Scanned with CamScanner

सांस्कृतिक जागरण का अन्यतम परिणाम है।

(4) साहित्यिक प्रभाव — भाषा के परिवर्तन करने में कभी-कभी साहित्यिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। मध्ययुग का भारतीय अथवा यूरोपीय इसका ऐतिहासिक प्रमाण है। भारत में संस्कृत का एकछत्र प्रभाव था। भक्ति-आन्दोलन ऐसा परिवर्तन हुआ कि पाठक ही नहीं लेखक भी संस्कृत से लोक-भाषाओं पर उतर आये जिसके कारण हिन्दी भाषा का प्रचलन हुआ, कबीर, जायसी, सूर, तुलसी आदि कवियों ने हिन्दी के विभिन्न बोलियों की अभिव्यंजना की।

(5) वैज्ञानिक प्रभाव — वैज्ञानिक प्रभाव के कारण असंख्य नयी वस्तुओं और नये तत्वों का अविष्कार हुआ जिसके कारण हजारों नये शब्द बने जिससे भाषा में अनेकों परिवर्तन हुए।

आभ्यान्तर कारण — (1) प्रयत्न-लाघव — प्रयत्न-लाघव के प्रभाव से भाषा में परिवर्तन होते देखा जाता है। मनुष्य चाहता है कि कम-से-कम मेहनत में अधिक लाभ हो। यह भावना भाषा के प्रयोग में भी काम करती है और इसके कारण भाषा में काफी हेर-फेर होता है जैसे टेलिफोन के बदले - फोन, रेलवे ट्रेन के बदले - रेल, रेलवे स्टेशन के बदले स्टेशन।

(2) बल → बोलने के क्रम में मेज पर हाथ पटकना या पंजों पर खड़ा हो जाना उसी बल को दृढ़ करने का साधन है। इन आंगिक चेष्टाओं से रहित भी बल का प्रयोग होता है जैसे - 'था ही' के बदले 'थैए था', 'करेंगे' के बदले 'करबे' आदि प्रयोग चलते हैं। ये सभी बल देने की इच्छा के प्रमाण हैं।

(3) भावातिरेक → प्रेम, क्रोध, शोक आदि भावों के अतिरेक से भी शब्दों का रूप बदल जाता है जैसे बाबू का बबुआ, बच्चा का बचवा, बेटी का बिटिया आदि।

(4) अपूर्ण अनुकरण → कभी कभी अज्ञानता के कारण भी किसी शब्द को अपूर्ण बोला जाता है जो भाषा परिवर्तनशीलता का कारण है। जैसे कोई 'पोस्टकार्ड' कहता है तो सुनने वाला अज्ञानी उसे पोसकाड कहता है जो परिवर्तन का अज्ञानता या अपूर्ण अनुकरण है।

(5) जातीय मनोवृत्ति — कुछ विद्वानों ने भाषा के परिवर्तन में जातीय मनोवृत्ति को भी स्थान दिया है। उनका कहना है कि प्रत्येक जाति की विशिष्ट मनोवृत्ति होती है जो एक दूसरे से भिन्न होती है। यदि ऐसा नहीं होता तो सभी जातियों की बौद्धिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ एक ही जैसी होती काव्य, दर्शन, संगीत, कला आदि का समान विकास सभी जातियों में नहीं हुआ है। जिन जातियों में कोमलता, स्निग्धता है, उनकी भाषा मधुर है और जिन जातियों में दृढ़ता या सबलता है उनकी भाषा कठोर है।

इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि भाषा परिवर्तन में उपरोक्त सभी तत्त्व प्रभावित करते हैं।

8.5

Scanned with CamScanner